bihar board class 9th hindi notes Chapter 6 – अष्टावक्र

लेखक – परिचय

विष्णु प्रभाकर

अष्टावक्र

विष्णु प्रभाकर का जन्म 21 जून , 1912 ई . को उत्तरप्रदेश के मुजफ्फरनगर जिला के मौरनपुर गाँव में हुआ था । उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव को पाठशाला में हुई । कुछ पारिवारिक कारणों से उनको शिक्षा के लिए हिसार (हरियाणा) जाना पड़ा । वहीं पर एक हाईस्कूल में उन्होंने शिक्षा प्राप्त की । विष्णु प्रभाकर के जीवन पर आर्य समाज तथा महात्मा गाँधी के जीवन – दर्शन का गहन प्रभाव पड़ा।

साहित्य को विभिन विधाओं में इन्होंने किए हैं – कहानी , उपन्यास , नाटक , एकांकी , स्केच और रिपोर्ताज में इनको विभिन्न रचनाएँ हमें सर्वथा नई भावभूमि से परिचित कराती हैं । निःसंदेह यह भावभूमि यथार्थ , आदर्श और स्वाभाविकता की टकराहट से उपजी हुई लगती है । कहानियाँ में कोमल क्षणों को मार्मिक संवेदनाएँ मिलती है । इनकी कहानियाँ रोचक होने के साथ साथ संवेदनशील भी हैं ।

विष्णु प्रभाकर को रचनाओं में प्रारंभ से है स्वदेश – प्रेम , राष्ट्रीय – चेतना और समाज सुधार का स्वर प्रमुख रहा है । इसके कारण इन्हें ब्रिटिश सरकार का कोपभाजन बनना पड़ा । स्वतंत्र प्राप्ति के बाद वे आकाशवाणी दिल्ली में रेडियो रूपक लिखने का कार्य करने लगे । रेडियो रूपकों के अतिरिक्त उन्होंने रंगमंचीय नाटक भी लिखे हैं । इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं – ढलती रात , स्वर्णमयी (उपन्यास) , संघर्ष के बाद (कहानी संग्रह) , नव प्रभात , डॉक्टर (नाटक) , जाने – अनजाने (संस्मरण और रेखाचित्र) , अवारा मसीहा (शरतचंद्र को जीवनी) ।

कहानी का सारांश

इस रेखाचित्र के प्रधान पात्र का नाम अष्टावक्र है । उसका नाम अष्टावक्र इसीलिए है कि वह सामान्य व्यक्ति से अलग एक विचित्र प्राणी है । उसके पैर किसी कवि की नायिका की तरह बल खाते थे और शरीर हिंडोल की तरह झूलता था । बोलने में वह साधारण आदमी के अनुपात से तिगुना समय लेता । वर्ण श्याम , नयन निरीह . शरीर एक शाश्वत खाण से पूर्ण , मुख लंबा और वक्र , वस्त्र कीट से भरे यह था उसका व्यक्तित्व । उसकी केवल माँ ही थी । बाप बचपन में ही चल बसे थे । आज इन बातों को तीस वर्ष बीत गए हैं । तब से अकेली माँ ही उसका लालन – पोषण करती आयी है । अष्टवक्र बुद्धि का मंद और मूर्ख था । परंतु माँ का स्नेह तीव्र था । भोलापन मूर्खता की सीमा पार कर गया था । वह अपना पेट भरने के लिए खोमचा लगाता था । अक्सर कचालू को चाट , मूंगदाल को पकौड़ियाँ , दही के आलू और चीनी के लिए खोमचा लगाता था । अक्सर कचालू की चाट , मूंगदाल की पकौड़ियाँ , दही के आलू और चीनी के बतासे इन सबको एक काले लोहे के थाल में सजाकर बेचा करता था । परंतु वह मूर्ख और भोला था । रोज डेव रुपये के सामान को दस – बारह आने में बेच आता था । फिर भी माँ का स्नेह बहुत था । सोने के लिए जगत के पास जा लेटती । एक समय अध्यावक्र को बुखार चढ़ आया । कुछ दिन के बाद माँ को भी ज्वर चढ़ आया । पैसे के लिए खोमचा लगाना आवश्यक था । माँ ने कहा बेसन उठा ला , वह बेसन उठा लाया , माँ ने लेटे – लेटे उसे पानी में घोला । उसमें आलू डाले । इतने में वह बुरी तरह हाँफ उठी । धुंए ने तन – मन को और भी कड़वा कर दिया । अष्टावक्र ने ऊँचे से मुट्ठी भर आलु- बेसन कड़ाही में छोड़े तो तेल सीधा छाती पर आ गया । तब हाय माँ कहकर वह वहीं लुढ़क गया । तीन दिनों तक दोनों की शरीर में शक्ति नहीं रहने के कारण कुछ छुआ तक नहीं । अष्टावक्र की माँ मर गई । अष्टावक्रा माँ माँ करते छटपटा रहा था । वह अकेला था ।आइसोलेशन वार्ड में डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया । कुलफीवाला जो अष्टावक्र को बगल में रहता उसने ईश्वर को धन्यवाद इसलिए दिया कि अष्टावक्र को अपने पास बुलाकर उन दोनों को सुख की लौंद सोने का अवसर दिया ।

https://www.evidyarthi.in/